IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन।

ऋचा चौहान,डा0 कुलदीप कुमार
शोधार्थी,असिस्टेन्ट प्रोफेसर
मदरहुड विश्वविद्यालय,शिक्षा विभाग
मदरहुड विश्वविद्यालय

सारांश

विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिये अपने सार्म्थयनुसार राजकीय एंव अराजकीय विद्यालय में प्रवेश लेता है। प्रस्तुत शोध पत्र में हरिद्वार शहर के राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया। कक्षा 11 में अध्ययनरत 50 राजकीय एंव 50 अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियो को चुना गया। सर्वेक्षण विधि द्वारा आंकडो को एकत्रित कर सांख्यिकी गणना की गई। गणना से यह ज्ञात हुआ कि राजकीय एंव अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द– राजकीय, अराजकीय, उच्च माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि।

मानव जीवन के विकास की महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। शिक्षा की सहायता से भी मानव का सर्वागीण विकास होता है। शिक्षा के पूर्ण अर्थ की व्याख्या कर पाना कठिन है शिक्षा प्रक्रिया और परिणाम दोनो रूपो के द्वारा व्यक्ति के सभी पक्षो पर प्रभाव पडता है।
वर्तमान समय में शिक्षा को ही मानव संसाधन के रूप में विकसित करने का एक संशक्त साधन माना जाता है। वैसे तो जन्म के बाद से बालक/बालिका को पारिवारिक जनो के सम्पर्क में वांछित व्यवहार में ढालने की शिक्षा मिलने लगती है। किन्तु यह अव्यवस्थित तथा अनौपचारिक रहती हैं। विद्यालय में प्रवेश लेने पर ही बालक/बालिका की भविष्य में होने वाली आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये, शिक्षको द्वारा बालक/बालिका की व्यवस्थित क्रिया प्रक्रिया के माध्यम से अनौपचारिक रूप से शिक्षा दी जाने लगती है।

बहुत से मनोवैज्ञानिको, शिक्षाशास्त्रियो ने शिक्षा को संकुचित और व्यापक अर्थो में स्पष्ट किया है। संकुचित शब्दो में शिक्षा का सीधा सम्बन्ध विद्यालय से है, जहाँ विद्यार्थी को पुस्तकीय ज्ञान प्रदान किया जाता है। विद्यालय में दी जाने वाली ऐसी शिक्षा को बालक बालिका कितना ग्रहण कर पा रहे है। इसकी जाँच समय समय पर परीक्षाऐं लेकर की जाती है। एक विद्यार्थी द्वारा इन परीक्षाओ में प्राप्तांक को ही विषय में विद्यार्थी के सीखे गये ज्ञान का घोतक माना जाता है । उस विषय में प्राप्त प्राप्तांको को विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि कहा जाता है। एक कक्षा में अध्ययन किये जाने वाले सभी विषयो में प्राप्त अंको का योग विद्यार्थी की समग्र शैक्षिक उपलब्धि तथा इसका प्रतिशत रूप ही विद्यार्थी की उस कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के रूप में स्वीकारा जाता है अर्थात् उस ज्ञान मापन शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर किया जाता है। फिर उस ज्ञान का मापन शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर किया जाता है। विद्यालय में विद्यार्थी के भविष्य उसकी शैक्षिक

उपलब्धि पर निर्भर करता है। अध्यापक अपनी शिक्षा के सभी पहलू की जांच शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर करता है।

शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा ही शिक्षक विद्यार्थी के सीखे गये ज्ञान की जांच करता है। विद्यालयो में विद्यार्थीयो की शैक्षिक उपलब्धि हेतु परीक्षाओ का आयोजन होता है। इन परीक्षाओ के प्रश्न पत्र शिक्षक अपने पढाये गये विषय से बनाता है। विद्यालय में दी जाने वाली शिक्षा को औपचारिक शिक्षा कहते है। प्रत्येक राष्ट्र में एक उत्तम नागरिक बनाने की जिम्मेदारी इन विद्यालयो पर ही होती है। विद्यालय शिक्षा की सहायता से विद्यार्थी का सर्वागीण विकास होता है। समाज में सरकार द्वारा राजकीय विद्यालयो की स्थापना करने के साथ ही कतिपय प्रतिष्ठित व्यक्तियो/संस्थाओ द्वारा भी विद्यालयो की स्थापना की जाती है। इन्हे सरकार द्वारा संचालित नही किया जाता है और इन्हें राजकीय या अराजकीय विद्यालय कहा जाता है। दोनो ही प्रकार के विद्यालयो को शैक्षिक वातावरण में विभिन्न कारणो से कुछ न कुछ अन्तर आ जाता है। जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव वहाँ अध्ययन कर रहे विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि पर पडने लगता है। इसी तरह विद्यालयो में बालक बालिकाऐं भी, एक साथ में अध्ययन करते है। इन बालक बालिकाओ में भी अध्ययन की आदतो, पठन–पाठन में एकाग्रता, रूचि, क्षमताओ, सुविधाओ आदि प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष कारणो से उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होने की संभावना रहती है। जिससे बालको व बालिकाओ की शैक्षिक उपलब्धि में भी अन्तर आ सकता है। इन दोनो ही परिस्थितियो पर विचार करते हुये, प्रस्तुत शोध अध्ययन सम्पन्न किया गया है। यह प्रयास किया गया है, कि प्रस्तुत शोध अध्ययन से प्राप्त परिणामो के अध्ययन में राजकीय/अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो में कार्यरत शिक्षको, अध्ययनरत छात्र/छात्राओ, अभिभावको तथा विद्यालयो के प्रधानाचार्यो को इस सम्बन्ध में गम्भीर चिन्तन मनन की प्रेरणा मिलेगी। जिससे कि विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में गुणात्मक सुधार किये जा सकेंगे। इन्ही सब बातो को ध्यान में रखकर विद्यालय में राजकीय और अराजकीय विद्यालयो में शिक्षा की समान व्यवस्था होती है। इन दोनो विद्यालयो के संचालक अलग अलग होते है। राजकीय विद्यालयो का संचालन सरकार द्वारा किया जाता है। वही अराजकीय विद्यालयो का संचालन संस्था या व्यक्तिगत होता है। राजकीय व अराजकीय विद्यालयो की कार्य पद्धति में अतंर होता है। इन विद्यालयो में पढने वाले विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु शोधार्थी ने राजकीय एंव अराजकीय विद्यालयो का अध्ययन किया है।

शोध साहित्य का अनुशीलन

बालक को शिक्षित करने के लिये घर को ही बालक की प्रथम पाठशाला माना जाता हैं इस प्रकार हम कह सकते है, कि विद्यालय किसी भी राष्ट्र के लिये महत्वपूर्ण होता है।

इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु सरकार द्वारा राजकीय विद्यालय खोले गये है। इस उद्देश्य की प्राप्ति हेतु समाज व व्यक्तियो द्वारा अराजकीय विद्यालय भी खोले गये है। **चेतना प्यारी (2016)** ने अपने अध्ययन में यह पाया कि चित्रकुट जिले के राजकीय व अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नही होता है। **रत्नेश (2014)** ने अपने अध्ययन में पाया कि शासकीय एंव अशासकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सहसम्बन्ध नही होता है। इस प्रकार **पुष्पराज (2017), दीपेन्द्र (2011)** ने अपने अध्ययन में राजकीय एंव अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थी की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

शोधार्थी के मन में राजकीय व अराजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के अध्ययन हेतु जिज्ञासा उत्पन्न हुई। इस कारण शोधार्थी ने हरिद्वार जिले के राजकीय एंव अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि पर अध्ययन किया।

उद्देश्य :–

1. राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना है।
2. राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का का अध्ययन करना।
3. राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
4. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्रो व छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
5. अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रो व छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना ।

परिकल्पनाः–

1. राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक नही है।
4. राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्र और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक नही है।
5. अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्र और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक नही है।

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन आदर्श मूलक सर्वेक्षण विधि को प्रयुक्त करके किया गया हैं।

शोध उपकरणः–

शैक्षिक उपलब्धि का आंकलन विद्यार्थीयो की हाईस्कूल परीक्षा के प्राप्तांको(%) को शैक्षिक उपलब्धि माना गया है।

जनसंख्या एंव न्यायदर्श

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध अध्ययन के प्रतिदर्श का चुनाव उद्देश्य विधि से किया गया है। जनसंख्या के रूप में हरिद्वार जनपद के राजकीय/अराजकीय उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो को चुना गया। जिनमें से 50 राजकीय एंव 50 अराजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थी को लिया गया।शोधार्थी ने न्यादृच्छिय के माध्यम से दो राजकीय व दो अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो को चिन्हित किया गया। तथा ऑकडे संग्रह करने की तिथि पर उन विद्यालयो में उपलब्ध कक्षा दस के विद्यार्थियो को न्यायदर्श में सम्मिलित किया गया। विवरण निम्नवत है।

क्र0संख्या	विद्यालय	छात्र	छात्राऐं	योग
1	राजकीय विद्यालय	25	25	50
2	अराजकीय विद्यालय	25	25	50
	योग	50	50	100

शोध अध्ययन की प्रकिया

निर्धारित तिथियो पर राजकीय एंव अराजकीय विद्यालयो में स्वंय जाकर शोधाकत्री ने कक्षा ग्यारह में उपलब्ध छात्र छात्राओ से, शैक्षिक उपलब्धि की गणना के लिये उनकी दसवीं कक्षा के अंकपत्र प्राप्त किये।

परिकल्पना –1

राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0सं0	विद्यालय	विद्यार्थियो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानो में अन्तर	टी मान	सार्थकता स्तर
1	राजकीय	50	98.77	19.44	5.30	1.08	NS
2	अराजकीय	50	104.07	28.59			

df=98 के लिये 0.05 स्तर पर सार्थक टी मान–1.97 से कम है।

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि राजकीय विद्यालयो की अपेक्षा अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक पाया गया (M2>M1)। इसी तरह राजकीय विद्यालयो की तुलना में अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो को शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन भी अधिक है किन्तु दोनो ही प्रकार के विद्यालयो के विद्यार्थियो को शैक्षिक उपलब्धि में व्याप्त अन्तर टी– मान (1.08) के मदो में .05 स्तर पर दिये गये। टी–मान (1.0) से अत्यधिक कम पाया गया, जो यह दर्शाता है कि 95 प्रतिशत तक भी राजकीय व अराजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान के मदो में अन्तर सार्थक नही है, तदैव परिकल्पना 1 स्वीकृत हो रही है। संभवतः दोनो ही प्रकार के विद्यालय के अध्यापन व विद्यार्थियो के अध्ययन का एक जैसा परिवेश होना इसका एक मुख्य कारण हो सकता है।

परिकल्पना–2

राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि मे कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0सं0	विद्यालय	विद्यार्थियो की संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानो में अन्तर	टी मान	सार्थकता स्तर
1	राजकीय	25	49.99	7.43	0.35	0.10	NS
2	अराजकीय	25	15.93	0.35			

df=48 के लिये 0.05 स्तर पर सार्थक टी मान–1.97 से कम है।

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि अराजकीय विद्यालयो की अपेक्षा राजकीय विद्यालय के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक पाया गया। इस तरह अराजकीय विद्यालयो की अपेक्षा राजकीय विद्यालय के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन भी अधिक है, किन्तु दोनो ही प्रकार के विद्यालय के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि में व्याप्त अन्तर टी मान (1.08) के पदो में 0.05 स्तर पर दिये गये। टी–मान (1.97) से कम है। जो यह दर्शाता है कि 95 % तक भी राजकीय व अराजकीय विद्यालयो के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान पदो अन्तर सार्थक नही है। तदैव परिकल्पना 2 स्वीकृत हो रही है। शायद दोनो की विद्यालयो में शैक्षिक परिवेश एक जैसा ही इस मुख्य कारण है।

परिकल्पना –3

राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो की छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0सं0	विद्यालय	N	M	SD	M1-M2	टी मान	सार्थकता स्तर
1	राजकीय	25	48.78	12.01	4.95	1.42	NS
2	अराजकीय	25	53.73	12.66			

df=48 के लिये 0.05 स्तर पर सार्थक टी मान–1.97 से कम है।

उपरोक्त सारणी से विदित होता है कि अराजकीय विद्यालय की अपेक्षा राजकीय विद्यालय की छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान कम पाया गया है। अराजकीय विद्यालय की अपेक्षा राजकीय विद्यालय की छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन कम पाया गया है। किन्तु दोनो ही प्रकार के विद्यालय के छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में व्याप्त अन्तर टी–मान (1.08) के पदो में .05 पर दिये गये टी–मान (1.97) से कम पाया गया। जो यह दर्शाता है कि 95 प्रतिशत तक भी राजकीय एंव अराजकीय विद्यालय के छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान के पदो में अन्तर सार्थक नही है तदैव परिकल्पना 3 भी स्वीकृत होती है। सम्भवतः दोनो विद्यालयो में शैक्षिक परिवेश एक जैसा होना इसका मुख्य कारण है।

परिकल्पना–4

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के छात्र और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

क्र0सं0	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानो में अन्तर	टी मान	सार्थकता
1	छात्र	25	49.99	7.43	1.22	0.43	NS
2	छात्राऐं	25	48.98	12.01			

df=48 के लिये 0.05 स्तर पर सार्थक टी मान–1.97 से कम है।

उपरोक्त सारणी से विदित है कि राजकीय विद्यालय के छात्राओ की अपेक्षा छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक है। उसी प्रकार राजकीय विद्यालय की छात्राओ की अपेक्षा छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन भी कम पाया गया है। किन्तु राजकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओ की शैक्षिक अंतविद में टी–मान (1.08)के पदो में .03 पर दिये गये के मान (1.97) से कम पाया गया, यह दर्शाता है कि 95 प्रतिशत तक भी राजकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओ की शैक्षिक अंतविद के मध्यमान के पदो में अन्तर सार्थक नही है। तदैव परिकल्पना भी स्वीकृत होती है। राजकीय विद्यालय में शिक्षक, पाठ्यक्रम, शैक्षिक परिवेश एक समान होना इस का मुख्य कारण है।

परिकल्पना–5

अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र और छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अंतर नही है।

क्र0सं0	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमान में अन्तर	टी मान	सार्थकता
1	छात्र	25	50.34	15.93	3.98	0.83	NS
2	छात्राऐं	25	53.73	12.66			

df=48 के लिये 0.05 स्तर पर सार्थक टी मान–1.97 से कम है।

उपरोक्त सारणी से यह विदित होता हैं की अराजकीय विद्यालय के छात्रो की अपेक्षा छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक पाया गया। इसी प्रकार अराजकीय विद्यालय के छात्रो की अपेक्षा छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि का मानक विचलन कम पाया गया। किन्तु अराजकीय विद्यालय के छात्र व छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि में पर्याप्त अन्तर टी–मान (1.08) के पदो में .05 पर दिये गये टी के मान (1. 97) से कम है। जो यह दर्शाता है कि 95 प्रतिशत तक भी अराजकीय विद्यालयो के छात्र एंव छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमान के पदो में अन्तर सार्थक है तदैव परिकल्पना 5 मी स्वीकृत होती है। सम्भवतः अराजकीय विद्यालय के शिक्षक पाठ्क्रम, शैक्षिक परिवेश समान होना इसका मुख्य कारण है।

निष्कर्ष

1. राजकीय विद्यालयो के विद्यार्थियो की अपेक्षा अराजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान के पदो में अधिक पाई गई।
2. राजकीय विद्यालयो में छात्राओ की अपेक्षा छात्रो की शैक्षिक उपलब्धि का मध्यमान अधिक पाया गया।
3. अराजकीय विद्यालयो में छात्रो की अपेक्षा छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि मध्यमान के पदो में अधिक पाई।

शोध अध्ययन के प्राप्त परिणामो के निष्कर्ष के आधार पर यह कहा जा सकता है कि हरिद्वार शहर के राजकीय एंव अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयो के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है। वही राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र एंव छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य को सार्थक अन्तर नही है और अराजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र एंव छात्राओ की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही है। शोधकत्री ने प्रदत्तो के एकत्रीकरण करते समय कई महत्वपूर्ण बिन्दूओ को महसूस किया। राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो में अराजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो की अपेक्षा आत्मविश्वास कम था। राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो जिज्ञासा की कमी, तथा झिझक को भी महसूस किया। प्राप्त ऑकडो के अनुसार राजकीय एंव अराजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो की शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक अन्तर नही है। परन्तु अराजकीय विद्यालय के विद्यालयो का मध्यमान एंव मानक विचलन राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियो से अधिक है। संभवतः इसका कारण पाठयपुस्तक, शैक्षिक वातावरण, शिक्षण सहगामी क्रियाएँ इत्यादि है। अराजकीय विद्यालय मे विषय की पाठयपुस्तक के अलावा अन्य विषय पुस्तको का भी प्रयोग किया जाता है। साथ ही विद्यार्थियो को शिक्षण के साथ अन्य सहभागी क्रियाएँ भी कराई जाती है। विद्यार्थियो के व्यक्तित्व पर शिक्षक का काफी प्रभाव पडता है। जहॉ राजकीय विद्यालय के शिक्षक शिक्षण के अलावा अन्य राजकीय कार्यो को भी करते है। साथ ही उनका बार बार तबादला विद्यार्थी और उनके शिक्षण कार्य को भी प्रभावी करता है।

संदर्भ

पुष्पराज सिंह और जय सिंह (2017) रीवा संभाग में शासकीय एंव अशासकीय विद्यालय के छात्रो की आत्मसंप्रत्य एंव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन इन्टरनेशनल जनरल ऑफ मल्टीडिशप्लेनरी एजुकेशन एण्ड रिसर्च Vol-2, Issue-2, Pg -74-78.

ओल्पोर्ट, जी. डब्ल्यू : व्यक्तित्व ए साइकोलोजिकल इन्टरपरिटेशन, न्यूयार्कः हाल्ट,1937.

खान, प्रो एस एच और श्रीमती शुक्ला भटटाचार्य, अध्यापकीय दर्शिकाः परिवेशीय अध्ययन–कक्षा 1, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली (भारत),1987,44.

कौल लोकेशः शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली, विकास पब्लिसिंग हाउस प्रा.लि., नई दिल्ली, 1998.

मूज, आरः सोशल इकोलॉजी, मल्टी डाइमन्सनल स्टडीज ऑफ ह्यूमन्स एण्ड ह्यूमन मिल्यूल इन हैम्बर्ग डी. एण्ड ब्रोडी, के (एडीटर्स) फ्रन्टीयर्स ऑफ साइकोलाजी, वोल्यूम 6, अमेरिकन हैण्डबुक ऑफ साइकियाट्री बेसिक बोर्डस,न्यूयार्क, 1964, पृ.–355–365.

थोर्प, एल.वी और सैमुलर, एम.ए.: पर्सनेल्टी एण्ड इन्टर डिस्सपलीनरी एपसेज न्यूयार्क : एन ईस्ट–वेस्ट एड. ,1965.